Sardar Antaji Mankeshwar Gandhe

Sardar Antaji Mankeshwar Gandhe, the commander of the Delhi-based army of the Maratha Empire, was born in 1695 in the Supa province in Ahmednagar district of Maharashtra. He was from a common Farmer family. Due to the severe famine, he came to Kanauj in North India, for education and livelihood with his uncle. There he received his Weapon and Shastra education from Pt. Ramchandra Bhatt and Sufi music education from Haiti Baba.

In his youth, Shrimant Shahu Maharaj, the crown prince of the Maratha Empire and grandson of Chhatrapati Shivaji Maharaj, saw his talent. When Shahuji became the successor of the Maratha Empire after his coronation in 1708, he enrolled Antaji in his personal service. In due course of time, Shrimant Shahu Maharaj again won over the throne of Chatrapati in battle with Shrimant Tararani and began his rule as Emperor. The Post of a Prime Minister (Peshwa) was created in Punavadi (Pune) for the expansion of the Maratha Empire. Antaji Mankeshwar Gandhe was honoured with the post of "Sardar (Knight)" by Shahu Maharaj to expand the empire.

Under the guidance and patronage of Shahu maharaj, when the Peshwas expanded the Hindawi empire in India, Antaji Mankeshwar was appointed as Governor in Delhi and as per the famous Ahmadiyya Agreement of 1752, he was appointed as the commander-in-chief of the Maratha army of Delhi.

For over 21 years (from 1740 to 1761), Antaji was Governor of Maratha Empire. After the battle expert Prithiviraj Chauhan, only Sardar Antaji Mankeshwar Gandhe, controlled Hindustan as a Governor for such long period of time. Antaji hoisted the saffron flag in the whole of North India and kept the administration of the emperor and the Marathas undisturbed by foreign invaders.

Near Ahmednagar, Antaji established Kamargaon for his administration and built Garhi fort. During his tenure as the commander-in-chief, Antaji won many important battles in India from 1729 to 1757 by performing brilliantly against the foreign invaders. His decisions in battle space and administration are still considered directional and ideal.

In 1754, after the martyrdom of his son, he first opposed the practice of Sati Pratha and issued orders against it. He asked his army and family to follow those orders. This is an important contribution of Antaji's vision and ideas. He was honoured with the Saptahazari Mansab by the emperor. He also established his own coat of arms and seal for the administration.

Ahmadshah Abdali was driven twice across the border of Hindustan by Antaji. Antaji was proud of his bravery and he always fought for Hindustan and Maratha Empire. But on January 18, 1761, while coming towards Delhi from the third "Panipat War", he was killed by the attackers near Farrukhnagar.

India Post is pleased to issue Commemorative Postage Stamp on Antaji Mankeshwar Gandhe on his 261st death anniversary and appreciates his contribution in fight for the motherland against foreign invaders.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure/	:	Ms. Himani
Cancellation Cachet	:	Smt. Nenu Gupta
Text	:	Referenced from content provided by Proponent

भारतीय डाक
India Post

डाक विभाग
Department of Posts



सरदार अन्ताजी माणकेश्वर गन्धे
Sardar Antaji Mankeshwar Gandhe



विवरणिका Brochure

सरदार अन्ताजी माणकेश्वर गन्धे

सरदार अन्ताजी माणकेश्वर गन्धे मराठा साम्राज्य की दिल्ली सेना के सेनापति थे। अन्ताजी का जन्म 1695 में महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले के सुपा प्रांत में हुआ। सरदार अन्ताजी माणकेश्वर गन्धे एक साधारण काश्तकार परिवार से थे। भीषण अकाल के कारण, वे शिक्षा एवं जीविकोपार्जन हेतु अपने चाचा के साथ उत्तर भारत के कन्नौज में आ बसे। यहां उन्होंने पंडित रामचंद्र भट्ट से शास्त्र तथा शस्त्र विद्या तथा हैती बाबा से सूफी संगीत की शिक्षा प्राप्त की।

छत्रपति शिवाजी महाराज के पौत्र और मराठा साम्राज्य के युवराज श्रीमंत शाहू महाराज ने इस युवा प्रतिभा को पहचाना। सन 1708 में राज्याभिषेक के पश्चात जब शाहूजी मराठा साम्राज्य के उत्तराधिकारी बने, तब उन्होंने अन्ताजी को अपनी निजी सेवा में रख लिया। कुछ समय पश्चात, श्रीमंत शाहू महाराज ने श्रीमंत ताराराणी के साथ युद्ध में विजय प्राप्त कर छत्रपति का सिंहासन पाया एवं सम्राट के रूप में शासन संभाला। मराठा साम्राज्य के विस्तार के प्रयोजन से पूनवड़ी (पुणे) में पेशवा का पद बनाया गया। मराठा साम्राज्य के विस्तार हेतु शाहू महाराज द्वारा अन्ताजी माणकेश्वर गन्धे को "सरदार" की उपाधि प्रदान की गई।

जब शाहू महाराज के मार्गदर्शन और संरक्षण में पेशवाओं ने भारत में हिन्दवी साम्राज्य का विस्तार किया, तो अन्ताजी माणकेश्वर गन्धे को दिल्ली में मुत्सद्दी के रूप में नियुक्त किया गया और 1752 के प्रसिद्ध अहमदिया समझौते के अनुसार, उन्हें दिल्ली की मराठा फौज का सेनापति नियुक्त किया गया।

अन्ताजी, लगभग 21 वर्षों (1740 से 1761 तक) तक मराठा साम्राज्य के अधिशासक (गवर्नर) रहे। महान योद्धा पृथ्वीराज चौहान के बाद, सरदार अन्ताजी माणकेश्वर गन्धे एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने लंबे समय तक हिन्दुस्तान के गवर्नर पद की बागडोर संभाली। अन्ताजी ने पूरे उत्तर भारत में केसरिया रंग का ध्वज लहराया और विदेशी आक्रमणकारियों के विरुद्ध मराठा साम्राज्य की ढाल रहे।

प्रशासनिक कार्यों के संचालन के लिए अन्ताजी ने अहमदनगर के निकट कामरगाव की स्थापना की और गढ़ी किले का निर्माण कराया। सन 1729 से 1757 तक अन्ताजी ने प्रधान सेनापति के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान, भारत में विदेशी आक्रमणकारियों से लोहा लेते हुए, कई महत्वपूर्ण युद्धों में विजय हासिल की। युद्धभूमि और प्रशासनिक मामलों में उनके निर्णयों को आज भी मार्गदर्शी और आदर्श माना जाता है।

1754 में अपने पुत्र की शहादत के बाद उन्होंने सती प्रथा का पुरजोर विरोध किया और अपनी सेना और उनके परिवारों को इस संबंध में आदेशों का सख्ती से अनुपालन करने का हुक्म दिया। यह अन्ताजी के दूरदर्शी दृष्टिकोण का महत्वपूर्ण उदाहरण है। सम्राट द्वारा उन्हें 'सप्तहजारी मंसब' की उपाधि प्रदान की गई। अन्ताजी ने अपना राजचिह्न और प्रशासनिक मुहर भी बनाई।

अन्ताजी ने अहमदशाह अब्दाली को दो बार हिन्दुस्तान की सीमा से बाहर खदेड़ा। वे ऐसे बहादुर योद्धा थे, जो सदा हिन्दुस्तान और मराठा साम्राज्य की रक्षा के लिए तत्पर रहे।

18 जनवरी, 1761 को "पानीपत के तीसरे युद्ध" से दिल्ली लौटते समय फर्रुखनगर के समीप कुछ आक्रमणकारियों द्वारा उनकी हत्या कर दी गई।

भारतीय डाक, विदेशी आक्रमणकारियों से मातृभूमि की रक्षा में अन्ताजी माणकेश्वर गन्धे के योगदान के महत्व को रेखांकित करते हुए, उनकी 261वीं पुण्यतिथि पर स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :

डाक–टिकट / प्रथम दिवस आवरण / विवरणिका : सुश्री हिमानी

विरूपण कैशे : श्रीमती नीनू गुप्ता

पाठ : प्रस्तावक से प्राप्त सामग्री के आधार पर

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्य	: 500 पैसे
Denomination	: 500 p
मुद्रित डाक–टिकटें	: 301900
Stamps Printed	: 301900
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00